हिंदी को लेकर हीनता का भाव मिटाना होगा : हृदयनारायण

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : हिंदी भारत की मौलिक भाषा है। यह प्यार, प्रार्थना एवं संस्कार की भाषा है। संस्कृत से निकली होने के कारण यह समृद्ध भाषा है। हिंदी में भाव-जगत के जो शब्द हैं, वह अंग्रेजी में मिल ही नहीं सकते। इसलिए भारत के स्वाधीनता संग्राम की भाषा हिंदी ही बनी। हिंदी का विस्तार हो रहा है। वैश्विक क्षितिज पर हिंदी का प्रसार जारी है। दुनिया के अनेक भागों में अब हिंदी बोली जा रही है। हम हिंदी भाषी लोगों के मन में हिंदी के साथ हीनता की जो ग्रंथि बनी है, उसे तोड़ने की जरूरत है।

उक्त बातें महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ के सहयोग से 'स्वतंत्र भारत मे हिंदी की विकास यात्रा' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने कहीं।

उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर, डा. राजेंद्र प्रसाद सभी हिंदी के हिमायती थे। संविधान सभा में जवाहर लाल नेहरू भी हिंदी के पक्ष में बोले, लेकिन संविधान में हिंदी को वह स्थान नहीं मिल सका, जिसका वह हकदार थी। संविधान में किंतु-परंतु के साथ हिंदी राजभाषा है, लेकिन वास्तविक रूप में भारत की जनता के बीच वह राष्ट्रभाषा के रूप में ही प्रचलित है। आज केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र इत्यादि सभी दक्षिण भारत के प्रदेशों में हिंदी का विस्तार हो रहा है। हिंदी हर जगह बोली जा रही है। हिंदी ने अपना वैश्विक विस्तार का दायरा बढ़ाया हैं। हम हिंदी भाषी हिंदी के शुद्ध उपयोग के प्रति सचेत हों।

अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त ने कहा कि कोई भी सरकार अब हिंदी की विकास-यात्रा में अवरोध पैदा नहीं कर सकता, लेकिन हिंदी को अपने विकास के आयाम बढ़ाने हैं। उसे भारत के जन-जन की भाषा बनानी होगी। कार्यशाला में बतौर विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के पूर्व अध्यक्ष डा. कन्हैया सिंह ने कहा कि हिंदी के आदि कवि महायोगी गोरखनाथ हैं। ऐसे में गोरक्षपीठ के इस महाविद्यालय में हिंदी की विकास यात्रा पर आयोजित यह विमर्श और प्रासंगिक हो जाता है।

स्वतंत्र भारत में हिंदी विकास यात्रा विषय पर आयोजित संगोष्ठी में अतिथिगण

विधान सभा अध्यक्ष हृदय नरायण दीक्षित को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते सदानन्द प्रसाद

संगोष्ठी

- 'स्वतंत्र भारत में हिंदी की विकास यात्रा' विषयक कार्यशाला
- वक्ताओं ने कहा-बढ़ रहा हिंदी का गौरव, हमें मन से देना होगा मान

नैक में दिलाया हिंदी को सम्मान

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर कालेज, जंगल धूसड़ के प्राचार्य डा. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि हिंदी की विकास-यात्रा में इस महाविद्यालय की भी उल्लेखनीय भूमिका है। उन्होंने बताया कि कालेज ने नैक कराने के लिए स्व-अध्ययन रिपोर्ट हिंदी में भेजी, लेकिन नैक द्वारा भाषा के आधार पर अस्वीकृत कर दिया गया। इसके बाद तीन वर्ष की लड़ाई लड़ी गई, अंतत: नैक को हिंदी में स्व-अध्ययन रिपोर्ट स्वीकार करनी पड़ी। यह महाविद्यालय देश का पहला महाविद्यालय है जिसका नैक मूल्यांकन हिंदी में किया गया। हमने नैक में हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाई है। उद्घाटन समारोह का संचालन डा. अविनाश प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर देश भर से आए हुए लगभग 200 प्रतिनिधि महाविद्यालय की छात्र-छात्राओं के अलावा गोरखपुर विश्वविद्यालय व विभिन्न महाविद्यालयों के शिक्षकों की मौजूदगी भी रही।

अमर उजाला | गोरखपुर

सत्ता मिलते ही कांग्रेस भूल गई हिंदी हित का संकल्प : दीक्षित

एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूसड़ की दो दिवसीय कार्यशाला में बोले विधानसभा अध्यक्ष

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर।

हिंदी एक समृद्ध भाषा है। इसके विकास से ही राष्ट्र की उन्नति संभव है। हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाने के लिए आजादी के पहले से ही सभी लोग एकमत और एकजुट थे, किंतु आजादी के बाद सत्ता मिली तो कांग्रेस की कथनी व करनी में फर्क आ गया और उसने हिंदी की उपेक्षा की। स्वयं महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक में कहा है कि मुझे हिंदी बोलने में परेशानी होती है, फिर भी मैं चाहूंगा कि हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो।

ये बातें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन करने के बाद मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने कहीं। कहा कि आजादी के लिए संघर्ष के दौरान जवाहरलाल नेहरू ने भी कई बार कहा था कि हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा हो, किंतु बाद में संविधान निर्माण के दौरान वह अपनी बातों से मुकर गए। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि आज हिंदी का वर्चस्व देश के समूचे क्षेत्र में है। पहले जहां लोग हिंदी बोलने से कतराते थे, आज हिंदी भाषा से ही उनका विकास संभव हो सका है। हिंदी आत्मीय भाषा है, जो दिलों को आपस में जोड़ती है। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद गुप्त ने कहा कि संस्थान देश ही नहीं विदेशों में भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति कटिबद्ध है। हिंदी आज तेजी से बढ़ रही है। कोई भी सरकार हिंदी के विकास यात्रा में अवरोधी नहीं हो सकती। यह राष्ट्रीय कार्यशाला हिंदी के विकासात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। इससे पहले प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने मुख्य अतिथि को पुष्पगुच्छ व स्मृति चिह्न भेंट करके उनका स्वागत किया। संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने किया। इस दौरान डॉ. कन्हैया सिंह, सुबोध मिश्र आदि मौजूद रहे।

कार्यशाला में विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित को प्रो. सदानंद गुप्ता, डॉ. कन्हैया सिंह, प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने सम्मानित किया। अमर उजाला

आज का दिन 1789 में जॉर्ज वॉशिंगटन को सर्वसम्मति से अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया।

एमपी पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने किया उद्घाटन

हिन्दी की हीनता ग्रंथि मिलकर तोड़नी होगी

गोरखपुर | कार्यालय संवाददाता

हिन्दी भारत की मौलिक भाषा है। यह प्यार, प्रार्थना एवं संस्कार की भाषा है। संस्कृत से निकली होने के कारण यह समृद्ध भाषा है। हिन्दी में भाव-जगत के जो शब्द हैं, वह अंग्रेजी में मिल ही नहीं सकते। इसीलिए भारत के स्वाधीनता संग्राम की भाषा हिन्दी ही बनी। वैश्विक क्षितिज पर हिन्दी का प्रसार जारी है। दुनिया के अनेक भागों में हिन्दी बोली जा रही है। हम हिन्दी भाषी लोगों के मन में हिन्दी के साथ हीनता की जो ग्रन्थि बनी है, उसे हिन्दी भाषियों को मिलकर तोड़नी होगी।

ये बातें महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में उप्र हिन्दी संस्थान लखनऊ के सहयोग से 'स्वतन्त्र भारत में हिन्दी की विकास यात्रा' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि एवं उप्र के विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने कहीं। शनिवार को राष्ट्रीय कार्यशाला को उद्घाटन करते हुए श्री दीक्षित ने कहा कि महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सभी हिन्दी के हिमायती थे। संविधान सभा में जवाहर लाल नेहरू भी हिन्दी के पक्ष में बोले किन्तु संविधान में हिन्दी को वह स्थान नहीं मिल सका, जिसकी वह हकदार थी। आज केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र इत्यादि सभी दक्षिणी भारत के प्रदेशों में हिन्दी का विस्तार हो रहा है। हिन्दी हर जगह बोली जा रही है। हिन्दी ने अपना वैश्विक विस्तार का दायरा बढ़ाया है। जरूरत इस बात की है कि हम हिन्दी भाषी हिन्दी के शुद्ध उपयोग के प्रति सचेत हों।

शनिवार को एमपीपीजी कालेज जंगल धूषण में शनिवार को आयोजित स्वतंत्र भारत में हिन्दी की विकास-यात्रा विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में विधानसभाध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित को सम्मानित करते डॉ. प्रदीप राव साथ में प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त व डॉ. कन्हैया सिंह।

अपने बल पर आगे बढ़ रही हिन्दी : उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए उप्र हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त ने कहा कि संस्थान का कार्य हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। यह संस्थान देश ही नहीं, विदेशों में भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कटिबद्ध है। हिन्दी आज अपने बल पर तेजी से आगे बढ़ रही है। कोई भी सरकार अब हिन्दी की विकास-यात्रा में अवरोधी नहीं हो सकती, किन्तु हिन्दी को अपने विकास के आयाम बढ़ाने हैं। उसे भारत के जन-जन की भाषा बनानी होगी। यह राष्ट्रीय कार्यशाला हिन्दी के विकासात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने मे महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

महाविद्यालय के संघर्षों को याद किया : विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के पूर्व अध्यक्ष डॉ. कन्हैया सिंह ने कहा कि हिन्दी के आदि कवि महायोगी गोरखनाथ हैं। ऐसे में गोरक्षपीठ के इस महाविद्यालय में हिन्दी की विकास यात्रा पर आयोजित यह विमर्श और प्रासंगिक हो जाता है। प्रस्ताविकी प्रस्तुत करते हुए प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि हिन्दी की विकास-यात्रा में इस महाविद्यालय की भी उल्लेखनीय भूमिका है। हमने नैक मूल्यांकन कराने के लिए स्व-अध्ययन रिपोर्ट हिन्दी में भेजा। नैक द्वारा भाषा के आधार पर अस्वीकृत किए जाने पर तीन वर्ष की लड़ाई के बाद नैक को हिन्दी में स्व-अध्ययन रिपोर्ट स्वीकार करनी पड़ी। यह महाविद्यालय देश का पहला महाविद्यालय है जिसका नैक मूल्यांकन हिन्दी में अंकित किया गया।

आज हिन्दी में पढ़ाएंगे विशेषज्ञ

महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि तकनीकी सत्र व शोध पत्रों के वाचन के अलावा रविवार को एक सत्र हिन्दी पढ़ाने का भी चलेगा। शुद्ध हिन्दी लिखना व बोलना भाषा की समृद्धि के लिए बहुत जरूरी है। शुद्ध लिखने बोलने से ही हम आने वाली पीढ़ी को भाषा की शुद्धता के प्रति सचेत कर पाएंगे। विशेषज्ञ शुद्ध लिखने बोलने पर व्याख्यान देंगे।

देशभर के 200 प्रतिनिधि रहे मौजूद

सरस्वती वन्दना से प्रारम्भ उद्घाटन समारोह राष्ट्रगीत वन्देमातरम के साथ सम्पन्न हुआ। आकांक्षा, प्रिया वर्मा, वर्षा, वैष्णवी मिश्रा, अम्बिका व ललिता ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। देश भर से आए हुए लगभग 200 प्रतिनिधि महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, प्रो. रविशंकर सिंह, प्रो. मानवेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय, प्रो. शिवशरण दास, डॉ. अवधेश अग्रवाल, प्रो. महेश कुमार शरण आदि उपस्थित रहे। संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने किया।

हिन्दी की यह गति बोलने वालों के कारण ही : प्रो. मिश्र

गोरखपुर | कार्यालय संवाददाता

राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रथम तकनीकी सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. अनन्त कुमार मिश्र ने कहा कि भाषा का उल्लेख एतरेय उपनिषद में प्राप्त होता है। हिन्दी अर्वाचीन भाषाओं मे से एक है परन्तु आज यह अपना भविष्य तलाश रही है। वास्तविकता यह है कि हिन्दी की यह गति हिन्दी भाषा बोलने वालों के कारण ही हुई है। प्रथम और द्वितीय सत्रों में लगभग 35 शोध छात्रों ने अपने प्रपत्र प्रस्तुत किये।

विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित डॉ. कन्हैया सिंह ने कहा कि आज हर व्यक्ति पैसे के पीछे भागा जा रहा है। लोग अपनी भाषा से प्रेम नहीं कर रहे मूल संस्कृति विसरित होती जा रही है। लोग अपनी भाषा को पढ़ना नही चाह रहे हैं। इसका कारण यह है कि इस भाषा के बल पर वे रोजगार प्राप्त नहीं कर सकते हैं। विडंबना यह है कि आज जो बच्चे अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ रहे हैं उन बच्चो में अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और राष्ट्रीय भावना का विकास नहीं हो पा रहा है। शिक्षकों को भय है कि यदि बच्चा भाषा समझने लगेगा तो वह प्रश्न करेगा। इन प्रश्नों का समुचित उत्तर उनके पास नहीं होता।

इस कारण वे अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा नई पौध को अपने राष्ट्रीय ज्ञान से वंचित कर दिग्भ्रमित कर रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. कन्हैया सिंह ने कहा कि 1963 में हुए संविधान संशोधन कर अंग्रेजी भाषा को अनंत काल तक के लिए सशक्त कर दिया गया। इस संशोधन के अनुसार एक भी राज्य यही कहेगा कि राज्य भाषा अंग्रेजी होनी चाहिए। इस तरह से अंग्रेजी भाषा चलती रहेगी।

एमपीपीजी कालेज जंगल धूसड़ में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधित करते विधान सभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित। फोटो : एसएनबी

हिन्दी प्यार व संस्कार की भाषा : हृदय नारायण दीक्षित

गोरखपुर (एसएनबी)। विधानसभा अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने कहा कि हिन्दी भारत की मौलिक और प्यार, प्रार्थना व संस्कार की भाषा है।भाव जगत के जो शब्द हिन्दी में हैं वह अंग्रेजी में मिल ही नहीं सकते। यही वजह है कि हिन्दी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनी। आज हिन्दी का वैश्विक क्षितिज पर प्रसार जारी है। दुनिया के अनेक भागों मेंअब हिन्दी बोली जा रही है। ऐसे में हिन्दी भाषी लोगों के बन में हिन्दी के साथ हीनता की जो ग्रंथि बनी है, उसे तोड़ने की जरूरत है।

श्री दीक्षित, शनिवार को महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़ में 'स्वतंत्र भारत में हिन्दी की विकास यात्रा' पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उप्र हिन्दी संस्थान के सहयोग से आयोजित वर्कशाप को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, डा. भीमराव अंबेडकर व डा.राजेन्द्र प्रसाद हिन्दी के हिमायती थे। नेहरू भी हिन्दी के पक्ष में बोले लेकिन संविधान में हिन्दी को वह स्थान नहीं मिल सका, जिसकी वह हकदार थी। संविधान में किन्तु-परन्तु के साथ हिन्दी राजभाषा है जबकि वास्तविक रूप मेंभारत की जनता के बीच वह राष्ट्रभाषा के रूप में ही प्रचलित है।आज सभी दक्षिणी भारत के प्रदेशों में हिन्दी का विस्तार हो रहा है।हिन्दी हर जगह बोली जा रही है। लिहाजा हम हिन्दी भाषी हिन्दी के शुद्ध उपयोग के प्रति सचेत होना चाहिए। अध्यक्षता करते हुए उप्र हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त ने कहाकि हिन्दीआज अपने बूते तेजी से आगे बढ़ रही है।कोई भी सरकार अब हिन्दी की

हिन्दी की विकास यात्रा पर एमपी पीजी कालेज में राष्ट्रीय कार्यशाला

हिन्दी-संस्कृत में ही अभिव्यक्त हा सकता है भारत :प्रो.सदानंद गुप्त

गोरक्षनाथ हिन्दी के आदि कवि : डा. कन्हैया सिंह

विकास-यात्रा मेंअवरोधी नहीं हो सकती लेकिन हिन्दी को अपने विकास के आयाम बढ़ाने हैं। उसे भारत के जन-जन की भाषा बनानी होगी।भारत वास्तव में संस्कृत एवं हिन्दी में ही अभिव्यक्त हो सकता है।

बतौर विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के पूर्व अध्यक्ष डॉ. कन्हैया सिंह ने कहा कि हिन्दी के आदि कवि महायोगी गोरखनाथ हैं। ऐसे में गोरक्षपीठ के इस महाविद्यालय में हिन्दी की विकास यात्रा परआयोजित यह विमर्शऔर प्रासंगिक हो जाता है। प्रस्ताविकी रखते प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि हिन्दी की विकास-यात्रा में इस महाविद्यालय की भी उल्लेखनीय भूमिका है।हमने नैक कराने को स्व-अध्ययन रिपोर्ट हिन्दी में भेजा। नैक द्वारा भाषा के आधार पर अस्वीकृत किए जाने पर तीन वर्ष की लड़ाई के बाद नैक को हिन्दी में स्व-अध्ययन रिपोर्ट स्वीकार करनी पड़ी। यह देश का पहला महाविद्यालय है जिसका नैक मूल्यांकन हिन्दी में किया गया।

संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम आकांक्षा सिंह, प्रिया वर्मा, वर्षा जायसवाल, वैष्णवी मिश्रा, अम्बिका सिंह व ललिता ने प्रस्तुत किया। वर्कशाप में देशभर से आये लगभग 200 प्रतिनिधि महाविद्यालय की छात्र-छात्राओं के साथ प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, प्रो. रविशंकर सिंह, प्रो. मानवेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय, प्रो. शिवशरणदास, डॉ. अवधेश अग्रवाल, प्रो. महेश कुमार शरण, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ. हरेन्द्र शर्मा, प्रो. राजेन्द्र भारती, प्रदीप कुमार, डॉ. डीपी सिंह, डॉ. योगेन्द्रं प्रताप सिंह, डॉ. सन्तोष सिंह आदि मौजूद थे।